श्री अग्रसेन जी की आरती

जय अग्रसेन हरे, स्वामी जय अग्रसेन हरे।
कोटि–कोटि नत मस्तक, सादर नमन करें।
ओऽम् जय श्री अग्रसेन हरे ...

आश्विन शुक्ल एकम नृप वल्लभ जाए,
स्वामी वल्लभ घर जाए।
अग्रवंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे।।
ओऽम् जय श्री अग्रसेन हरे ...

केशरिया ध्वज फहरे, छत्र चंवर धारी,
स्वामी छत्र चंवर धारी।
झांझ, नफीरी, नौबत, बाजे तब द्वारे।।
ओऽम् जय श्री अग्रसेन हरे ...

अग्रोहा रजधानी, इंद्र शरण आए,
स्वामी इंद्र शरण आए।
गौत्र 18, अब तक तेरे गुण गाएं।।
ओऽम् जय श्री अग्रसेन हरे ...

सत्य अहिंसा पालक, न्याय नीति समता,
प्रभुं न्याय नीति समता।
ईंट रुपया की रीति, प्रकट करे ममता।।
ओऽम् जय श्री अग्रसेन हरे ...

ब्रह्म, विष्णु, शंकर वर सिंहनी दीन्हा,
स्वामी वर सिंहनी दीन्हा।
कुलदेवी महामाया वैश्य कर्म कीन्हा।।
ओऽम् जय श्री अग्रसेन हरे ...

अग्रसेन जी की आरती जो कोई नर गावे,
स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत त्रिलोक विनय से, इच्छित फल पाए।।
ओऽम् जय श्री अग्रसेन हरे ...

– त्रिलोक गोयल अजमेर